६

"महाभारत" से

लक्ष्य-बेध

प्राचीन काल में हस्तिनापुर के राजा पांडु के पाँच पुत्र थे। ये पाँचों राजकुमार पांडव कहलाते थे। युधिष्ठिर इनमें सबसे बड़े थे। युधिष्ठिर से छोटे भीम थे, फिर अर्जुन। पांडवों में सबसे छोटे थे, नकुल और सहदेव। काफ़ी समय राज्य करने के बाद पांडु अपना राज्य अपने बड़े भाई धृतराष्ट्र को देकर जंगल में चले गये और वहीं उनकी मृत्यु हो गई।

राजा धृतराष्ट्र के सौ बेटे थे। ये कौरव कहलाते थे। दुर्योधन इनमें सबसे बड़ा था। पांडव और कौरव राजकुमार साथ-साथ खेलते और पढ़ते थे। उनके गुरु द्रोणाचार्य थे। सभी राजकुमार गुरु द्रोणाचार्य से शस्त्र-विद्या सीखते थे। इन सब राजकुमारों में सबसे अधिक योग्य अर्जुन थे। धनुर्विद्या में कोई उनके समान न था। इसी कारण द्रोणाचार्य को अर्जुन बहुत प्रिय थे।

एक दिन द्रोणाचार्य ने राजकुमारों की परीक्षा लेने का निश्चय किया। उन्होंने एक पेड़ पर तिनकों और कपड़े से बनी एक चिड़िया लटका दी। फिर सभी राजकुमारों को बुलाकर कहा, "आज तुम्हारी परीक्षा का दिन है। अपने धनुष और बाण लेकर तैयार हो जाओ। तुम्हें चिड़िया की दाहिनी आँख को अपने बाण से बेधना है। तुम सब लोग अपना निशाना साध लो। लेकिन मेरी आज्ञा मिलने से पहले अपना बाण न छोड़ना।"

गुरु की आज्ञा पाकर सब राजकुमारों ने निशाना साध लिया। पहले द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर से कहा, "युधिष्ठिर, तुम सबसे बड़े हो। सबसे पहले तुम्हारी ही परीक्षा होगी।" युधिष्ठिर ने कहा, "मैं तैयार हूँ, गुरुजी। आज्ञा दीजिये।" तब द्रोणाचार्य ने पूछा, "बताओ, तुम्हें सामने क्या दिखाई दे रहा है?" युधिष्ठिर ने जवाब दिया, "गुरुजी, मैं सामने इस पेड़ को, पेड़ की पत्तियों को, और पेड़ की डाल पर बैठी चिड़िया को देख रहा हूँ।" युधिष्ठिर के इस जवाब से द्रोणाचार्य संतुष्ट नहीं हुए।

इसके बाद द्रोणाचार्य ने एक-एक करके सभी राजकुमारों से यही सवाल पूछा, "तुम्हें सामने क्या दिखाई दे रहा है?" सभी का लगभग एक-सा ही जवाब था कि उन्हें सामने का पेड़, उसकी पत्तियाँ और पेड़ की शाखा पर बैठी चिड़िया दिखाई दे रही है। अंत

में निराश होकर द्रोणाचार्य ने अर्जुन से भी यही सवाल पूछा। अर्जुन ने तुरंत उत्तर दिया, "गुरुजी, मुझे तो सिर्फ़ चिड़िया ही दिखाई दे रही है। इस उत्तर से प्रसन्न होकर द्रोणाचार्य ने कहा, "अगर सिर्फ़ चिड़िया ही देख रहे हो, तो उसका वर्णन करो।" अर्जुन ने कहा, "चिड़िया का वर्णन कैसे करूँ ? मैं तो सिर्फ़ उसकी दाहिनी आँख ही देख रहा हूँ, उसका शरीर नहीं।"

अर्जुन के इस जवाब से संतुष्ट होकर द्रोणाचार्य ने उसे बाण चलाने की आज्ञा दी। अर्जुन का बाण ठीक चिड़िया की दाहिनी आँख में लगा। प्रसन्न होकर द्रोणाचार्य ने अर्जुन को गले लगाया और कहा, "केवल तुम ही धनुर्विद्या में उत्तीर्ण हुए। बाण चलानेवाले को इतना एकाग्रचित होना चाहिये कि अपने लक्ष्य के अलावा उसे कुछ भी दिखाई न दे। तभी उसका निशाना अचूक होगा। आसपास की चीज़ों पर ध्यान देने से लक्ष्य पर निशाना ठीक नहीं लगता। मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ।"

एकलव्य की गुरुदक्षिणा

द्रोणाचार्य पांडव और कौरव राजकुमारों को शस्त्र-विद्या सिखाते थे। इन सब राजकुमारों में अर्जुन द्रोणाचार्य को बहुत प्रिय थे क्योंकि वह बहुत वीर थे और धनुर्विद्या में कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकता था। अर्जुन की योग्यता देखकर एक दिन द्रोणाचार्य ने अर्जुन से कहा था, "मैं ऐसा प्रयत्न करूँगा कि संसार में तुम्हारे समान कोई धनुर्धर न हो।"

द्रोणाचार्य के शिक्षा-कौशल की बात जल्दी ही आसपास के राज्यों में फैल गई। बहुत-से राजकुमार उनसे शस्त्र-विद्या सीखने आने लगे। एक दिन निषादराजा हिरण्यधनु का पुत्र एकलव्य भी शस्त्र-विद्या पाने के लिए उनके पास आया। क्योंकि वह निषाद जाति का था, इसलिए द्रोणाचार्य ने समाज के नियमों को देखते हुए उसे शिक्षा देना स्वीकार नहीं किया। एकलव्य द्रोणाचार्य के पाँव छूकर वन में लौट गया। वहाँ उसने द्रोणाचार्य की मिट्टी की प्रतिमा बनाई। अपने मन में द्रोणाचार्य को अपना गुरु

मानकर, वह उनकी प्रतिमा के सामने बाण चलाने का अभ्यास करने लगा। एकाग्रचित अभ्यास करने से वह जल्दी ही धनुर्विद्या में निपुण हो गया।

एक बार कौरव और पांडव राजकुमार शिकार खेलने के लिए वन में गये। उनके पीछे-पीछे उनका सामान और एक कुत्ता लेकर एक नौकर भी वहाँ गया। वन में एकलव्य अपना अभ्यास कर रहा था। उसका शरीर मैला-कुचैला था। कुत्ता उसे देखकर भौंकने लगा। कुत्ते को चुप करने के लिए एकलव्य ने सात बाण उसके मुँह में मारे। इन बाणों से कुत्ते का मुँह भर गया लेकिन उसको चोट नहीं लगी। कुत्ता भागता हुआ पांडवों के पास पहुँचा। उसका बाणों से भरा मुँह देखकर पांडवों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे जान गये कि पास में कोई बहुत निपुण बाण चलानेवाला है। ढूँढ़ने पर उनको वन में एकलव्य बाण चलाने का अभ्यास करते हुए मिल गया। उन्होंने पूछा, "तुम कौन हो और तुम्हारे गुरु कौन हैं ?" एकलव्य ने बताया, "मैं निषादराजा हिरण्यधनु का पुत्र और द्रोणाचार्य का शिष्य हूँ। मैं यहाँ धनुर्विद्या का अभ्यास करता हूँ।"

वन से लौटकर राजकुमारों ने द्रोणाचार्य को यह अद्‌भुत घटना सुनाई। एकांत में अर्जुन ने उनसे कहा, "गुरुदेव, आपने तो मुझसे कहा था कि आपका कोई भी शिष्य मुझसे बढ़कर न होगा। लेकिन आपका यह शिष्य एकलव्य तो हम सबसे बढ़कर है।" यह सुनकर द्रोणाचार्य कुछ देर सोचते रहे और फिर अर्जुन को लेकर उसी वन में गये। वहाँ उन्होंने देखा कि एकलव्य एकाग्रचित होकर धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहा है।

द्रोणाचार्य को देखते ही एकलव्य उनके पास आया और उनके चरणों में दंडवत् प्रणाम किया। फिर हाथ जोड़कर उनके सामने खड़ा हो गया और बोला, "आपका शिष्य सेवा के लिए तैयार है। आज्ञा दीजिये।" द्रोणाचार्य ने कहा, "अगर तू मेरा शिष्य है, तो मुझे मेरी गुरुदक्षिणा दे।" प्रसन्न होकर एकलव्य ने कहा, "आज्ञा दीजिये। मेरे पास ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जिसे मैं आपको न दे सकूँ।" द्रोणाचार्य तुरंत बोले, "एकलव्य, तू मुझे अपने दाहिने हाथ का अँगूठा गुरुदक्षिणा में दे दे।"

गुरुभक्त एकलव्य ने अपने गुरु की इस क्रूर आज्ञा को भी ख़ुशी से मान लिया और तुरंत अपने दाहिने हाथ का अँगूठा काटकर द्रोणाचार्य को दे दिया। इसके बाद उसके बाण चलाने में पहले जैसी निपुणता नहीं रही और अर्जुन ही अपने समय के सबसे योग्य धनुर्धर रहे।

द्रौपदी का चीर

युधिष्ठिर कौरवों और पांडवों में सबसे बड़े और बहुत गुणी थे । धृतराष्ट्र युधिष्ठिर को युवराज बनाना चाहते थे, लेकिन दुर्योधन और उसके भाइयों की ईर्ष्या के कारण ऐसा नहीं हो सका । दुर्योधन पांडवों को पूरी तरह नष्ट करना चाहता था । एक बार उसने पांडवों और उनकी माता को एक घर में जलाकर मार डालने की कोशिश भी की थी । पर पांडव अपनी माता के साथ वहाँ से बच निकले थे ।

कौरवों के पिता धृतराष्ट्र नहीं चाहते थे कि पांडवों और कौरवों में वैर बढ़े । इसलिए उन्होंने पांडवों को बुलाकर उन्हें आधा राज्य दे दिया । पांडवों ने वहाँ इंद्रप्रस्थ नाम का एक सुन्दर नगर बसाया और अपने बल से राज्य का विस्तार करने लगे ।

कुछ समय बाद दुर्योधन अपने मामा शकुनि के साथ इंद्रप्रस्थ आया । पांडवों की सफलता, समृद्धि और ऐश्वर्य देखकर उसका हृदय ईर्ष्या से जलने लगा और उसने पांडवों को नष्ट करने का दृढ़ निश्चय कर लिया । लेकिन वह जानता था कि वीर पांडवों को युद्ध में हराना असंभव है । उसकी चिंता को देखकर उसके मामा शकुनि ने कहा, "अच्छा, मैं तुम्हें युधिष्ठिर को जीतने का उपाय बताता हूँ । युधिष्ठिर को जुआ खेलना बहुत पसंद है, लेकिन उनको खेलना नहीं आता । अगर तुम उन्हें जुआ खेलने के लिए बुलाओ तो वे मना नहीं कर सकेंगे और मैं चतुराई से उनका सारा राज्य और वैभव जीत लूँगा ।"

दुर्योधन को शकुनि का सुझाव बहुत पसंद आया और उसने पांडवों को जुआ खेलने के लिये निमंत्रण भेज दिया । पांडवों की ओर से युधिष्ठिर ने और कौरवों की ओर से शकुनि ने जुआ खेलना शुरू किया । शकुनि जुआ खेलने में बहुत चतुर था । उसने अपनी चतुराई से पांडवों का सब धन और राज्य जीत लिया । जब युधिष्ठिर अपना सब कुछ जुए में हार गये तो उन्होंने एक-एक करके अपने सब भाइयों को और अंत में स्वयं को भी दाव पर लगा दिया और हार गये । युधिष्ठिर की इतनी हार पर भी शकुनि न रुका । उसने कहा, "अभी तो तुम्हारे पास तुम्हारी प्रिया द्रौपदी है । तुम उसे दाव पर लगाकर इस बार अपना सब कुछ वापस जीत सकते हो ।" इस पर युधिष्ठिर ने द्रौपदी को भी दाव पर लगा दिया और शकुनि छल-कपट से इस बार भी जीत गया ।

कौरवों की इस जीत से दुर्योधन की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उसने तुरंत एक सेवक को द्रौपदी को राजसभा में लाने की आज्ञा दी। जब लज्जा के कारण द्रौपदी राजसभा में नहीं आई तो दुर्योधन ने अपने छोटे भाई दुःशासन से कहा, "तुम स्वयं जाकर द्रौपदी को पकड़कर यहाँ लाओ।" द्रौपदी के विरोध करने पर दुःशासन ने उसके बाल पकड़ लिये और खींचता हुआ उसे राजसभा में लाया।

राजसभा में द्रौपदी को लाकर दुष्ट दुःशासन उसको नग्न करने के लिए उसका चीर खींचने लगा। ऐसे कठिन समय में द्रौपदी ने भगवान कृष्ण का स्मरण किया और मन ही मन प्रार्थना करने लगी, "हे प्रभु ! कौरव मेरा अपमान कर रहे हैं। मैं आपकी शरण में हूँ। आप मेरी रक्षा कीजिये।" द्रौपदी की पुकार सुनकर भगवान कृष्ण तुरंत गुप्त रूप से उस सभा में आये और द्रौपदी के चीर को अनंत कर दिया। अब दुःशासन जितना द्रौपदी के चीर को खींचता उतना ही वह बढ़ता जाता। धीरे-धीरे राजसभा में रंग-बिरंगे कपड़े का ढेर लग गया और दुःशासन थककर हार गया।

इस प्रकार भगवान कृष्ण ने द्रौपदी की लाज बचाई।

महाभारत से

लक्ष्य-बेध

लक्ष्य	M	target, aim; goal
बेधना	Tr	to pierce
लक्ष्य-बेध	M	hitting the target
प्राचीन	A	ancient
काल	M	time; period
हस्तिनापुर	P.N. (M)	Hastinapura, the capital city of the Kauravas
पांडु	P.N. (M)	Pandu, the king of Hastinapura
पुत्र	M	son
पांडव	P.N. (M pl)	the Pandavas, the sons of Pandu
कहलाना	Intr	to be called
युधिष्ठिर	P.N. (M)	Yudhisthira, the eldest of the Pandavas
भीम	P.N. (M)	Bhima, the second Pandava
अर्जुन	P.N. (M)	Arjuna, the third Pandava
नकुल	P.N. (M)	Nakula, the fourth Pandava and Sahadeva's twin
सहदेव	P.N. (M)	Sahadeva, the fifth Pandava and Nakula's twin
धृतराष्ट्र	P.N. (M)	Dhritarashtra, Pandu's brother
मृत्यु	F	death

कौरव	P.N. (M pl)	the Kauravas, the descendants of Kuru; more specifically, the sons of Dhritarashtra
दुर्योधन	P.N. (M)	Duryodhana, the eldest of the Kauravas
गुरु *	M	teacher, preceptor
द्रोणाचार्य	P.N. (M)	Dronacharya, the preceptor of the Pandavas and the Kauravas
शस्त्र *	M	weapon
शस्त्र-विद्या	F	the science of weapons
अधिक *	A	more, much, many
योग्य	A	able, competent, qualified
धनुर्विद्या *	F	'the science of bows', i.e., archery
समान	A	equal; similar, alike
X के समान	A	equal to X, like X
तिनका	M	straw
चिड़िया *	F	bird
लटकाना	Tr	to hang, to suspend
धनुष	M	bow
बाण	M	arrow
निशाना	M	aim; target
(अपना) निशाना साधना	Tr	to take (one's) aim
आज्ञा *	F	order, command
छोड़ना	Tr	to leave; to let go, to release, to discharge; here: to shoot

दिखाई देना *	Ind. Intr	to be seen (by)/visible (to)
पत्ती	F	leaf
डाल	F	branch
संतुष्ट	A	satisfied
एक-एक करके *	Adv	one by one, one at a time
लगभग	Adv	approximately, almost, about, more or less
एक-सा *	A	similar; identical; the same
शाखा	F	branch
अंत *	M	end
अंत में	Adv	in the end, finally
निराश	A	disappointed; discouraged
वर्णन	M	description
X का वर्णन करना	Tr	to describe X
चलाना	Tr	to cause to move; here: to shoot
ठीक	A/Adv	correct; exactly
X में लगना	Intr	to be attached/connected to X; here: to reach X, to hit X
गला *	M	neck; throat
X को गले लगाना	Tr	to embrace X
उत्तीर्ण	A	passed (in an examination)
एकाग्र *	A	concentrated on one point
एकाग्रचित	A	having one's mind concentrated on one point, fully concentrated
के अलावा *	Post	besides, except; in addition to

अचूक	A	unerring, sure
आसपास *	Adv	in the vicinity, around, nearby
ध्यान *	M	attention; concentration
X पर ध्यान देना	Tr	to pay attention to X

एकलव्य की गुरुदक्षिणा

एकलव्य	P.N. (M)	Ekalavya, name of a Nishada prince
गुरुदक्षिणा	F	the gift voluntarily paid by the disciple to his preceptor at the conclusion of his studies
सिखाना *	Tr	to teach
वीर	A	brave
बराबरी *	F	equality
X की बराबरी करना	Tr	to equal X, to match X
योग्यता *	F	ability, competence
योग्य	A	able, competent; worthy
प्रयत्न	M	attempt
X का प्रयत्न करना	Tr	to try to do X
संसार	M	world
धनुर्धर	M	archer, bowman
शिक्षा *	F	instruction, teaching
कौशल	M	skill
फैलना *	Intr	to spread

निषाद	P.N. (M)	the Nishadas, a pre-Aryan tribe living in the Vindhya Mountains
हिरण्यधनु	P.N. (M)	Hiranyadhanu, a Nishada king and father of Ekalavya
जाति *	F	caste, a local system of ranking society in hereditary and mainly endogamous groups
नियम *	M	rule, law
पाँव *	M	foot; leg
छूना *	Tr	to touch
वन	M	wood, forest
मिट्टी	F	earth, clay
प्रतिमा	F	image, statue
X को Y मानना	Tr	to accept X as Y
बाण	M	arrow
बाण चलाना	Tr	to shoot an arrow
X में बाण मारना	Tr	to shoot an arrow at X
शिकार *	M	hunting; victim, prey
शिकार खेलना	Tr	to hunt, to go hunting
नौकर *	M	servant
मैला	A	dirty
मैला-कुचैला	A	dirty and filthy
चुप *	A	silent, quiet
X को चुप करना	Tr	to silence X
चोट *	F	wound, hurt, injury

X को चोट लगना	Ind. Intr	for X to be injured/hurt
आश्चर्य *	M	surprise
X को आश्चर्य होना	Ind. Intr	for X to be surprised
शिष्य	M	disciple
अद्‌भुत	A	astonishing, extraordinary
घटना *	F	event, incident
सुनाना *	Tr	'to cause to listen', i.e., to tell, to relate, to recount, to recite
एकांत	M	solitude, seclusion; privacy
एकांत में	Adv	in private
गुरुदेव	M	term of address for a guru
X से बढ़कर	A	surpassing X, better than X
चरण	M pl	feet
प्रणाम	M	reverential salutation
दंडवत् प्रणाम	M	'rod-like reverential salutation', i.e., prostration
सेवा	F	service
अँगूठा *	M	thumb
भक्त	A/M	devoted; devotee
गुरुभक्त	A	devoted to one's guru
क्रूर	A	cruel
ख़ुशी से *	Adv	happily, gladly
मानना	Tr	to accept, to agree (to do something)
काटना *	Tr	to cut

निपुणता	F	skillfulness, dexterity

द्रौपदी का चीर

द्रौपदी	P.N. (F)	Draupadi, the wife of the five Pandavas
चीर	M	strip of cloth; clothing; here: sari
गुणी	A	endowed with good qualities, virtuous
युवराज	M	crown prince, heir apparent
ईर्ष्या	F	jealousy
नष्ट	A	destroyed
नष्ट करना	Tr	to destroy
जलाना *	Tr	to burn
वैर	M	enmity, hostility
बढ़ना *	Intr	to increase, to grow
आधा *	A	half
इंद्रप्रस्थ	P.N. (M)	Indraprastha, the capital city of the Pandavas
नगर	M	city, town
बसाना	Tr	to establish, to found (a settlement)
बल	M	strength
विस्तार	M	extension, enlargement
X का विस्तार करना	Tr	to extend X, to enlarge X
मामा *	M	uncle (mother's brother)

शकुनि	P.N. (M)	Shakuni, the maternal uncle of the Kauravas
सफलता *	F	success
समृद्धि	F	prosperity
ऐश्वर्य	M	prosperity; glory; opulence
दृढ़	A	firm
युद्ध	M	war
हराना	Tr	to defeat
असंभव	A	impossible
चिंता	F	worry
जीतना *	Intr/Tr	to win, to conquer
जीत	F	victory
उपाय	M	device, means; remedy
जुआ	M	gambling
जुआ खेलना	Tr	to gamble
मना करना *	Tr	to refuse; lit. to say 'No'
चतुराई	F	cleverness
वैभव	M	glory, magnificence
सुझाव	M	suggestion
निमंत्रण *	M	invitation
धन	M	wealth
हारना *	Intr/Tr	to lose; to be defeated
हार	F	defeat
दाव	M	stake
दाव पर लगाना	Tr	to put at stake
प्रिया	A (F only)	beloved
छल-कपट	M	deception, duplicity

प्रसन्नता	F	happiness
X का ठिकाना न रहना	Intr	for there to be no limit to X
सेवक	M	servant
राजसभा	F	royal court
लज्जा *	F	modesty
दुःशासन	P.N. (M)	Duhshasana, one of Duryodhana's brothers
विरोध	M	opposition
X का विरोध करना	Tr	to oppose X, to resist X
बाल *	M	hair
खींचना *	Tr	to drag, to pull
दुष्ट	A	wicked
नग्न	A	naked
कठिन *	A	difficult
भगवान कृष्ण	P.N. (M)	Lord Krishna
स्मरण	M	remembrance, recollection
X का स्मरण करना	Tr	to remember X
हे !	Interjection	Oh!
प्रभु	M	Lord
अपमान *	M	insult, disgrace; disrespect
X का अपमान करना	Tr	to insult X, to disgrace X
शरण	F	shelter, refuge
पुकार	F	call
गुप्त	A	hidden, secret
सभा	F	assembly
अनंत	A	endless
धीरे-धीरे *	Adv	gradually, slowly

रंग-बिरंगा	A	multicolored
ढेर	M	pile, heap
प्रकार *	M	kind; manner, way
इस प्रकार	Adv	in this way
लाज	F	modesty; honor
X की लाज बचाना	Tr	to save the honor of X